शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अधिगम शैलियाँ

डॉ. मुरलीधर मिश्रा*

ABSTRACT

Present study was an attempt to understand the learning style preferences of Hindi medium senior secondary students in relation to their academic achievement. Seven hypotheses of independence were formulated to realize the objective of study. 10th board result was taken as an indicator of academic achievement and 191 subjects (109 high and 82 low academic achievement) studying in 11th grade of Hindi Medium Senior Secondary schools of Jaipur district were taken as a final sample. Learning style preferences were assessed through Learning Style Inventory (LSI) of S.C. Agrawal. The chi-square values were calculated in order to find out the association between learning style and academic achievement of the students. The findings of the study reveal that only preference for environment oriented vs. environment free learning style of Hindi medium senior secondary schools students is dependent on their academic achievement.

प्रस्तावना

यह अनुभवजन्य तथ्य है कि कोई दो व्यक्ति बिल्कुल एक तरह नहीं सोचते हैं और न ही एक जैसे तरह अधिगम करते हैं। विद्यार्थी अपनी सामर्थ्य एवं क्षमता के अनुसार भिन्न तरह से अधिगम करते हैं। वे अधिगम लक्ष्य या समस्या का सामना करते समय भिन्न–भिन्न पथ अपनाते हैं। कोई विद्यार्थी जब अधिगम लक्ष्य अथवा समस्या समाधान के लिए जिस पथ या तरीके को अपनाता है, तब अधिगम स्थितियों में उसका व्यवहार अधिगम शैलियों की रचना करता है। अग्रवाल (1987) ने अधिगम के मार्ग में व्यक्ति के भौतिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा वातावरणीय तत्वों के प्रति वरीयताओं का योग के रूप में परिभाषित किया। डन एवं ग्रिगस (1988) के अनुसार अधिगम शैली, अभिप्रेरणा लक्ष्य के प्रति दृढ़ता अथवा एक साथ एक से अधिक दत्त कार्यों की आवश्यकता, आवश्यक संरचना की मात्रा व प्रकार तथा सम्पुष्टता बनाये रखते हुए असम्पुष्टता के स्तर को निरूपित करती है। स्टिट्ट–गोहदेस (2003) के अनुसार जब अध्यापक की शिक्षण शैली से विद्यार्थी की अधिगम शैली सुमेलन होने से विद्यार्थी अभिप्रेरणा के साथ शैक्षिक उपलब्धि में सुधार आता है। इसके विपरीत यिल्दिरिम एवं अन्य (2008) ने अधिगम शैली एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध को सार्थक नहीं पाया।

भाषा का गहन सम्बन्ध अनुभूतियों व क्रियाओं से है। विचारों के आदान–प्रदान की कुशलता; मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक एवं नैतिक विकास; नागरिकता के गुणों का विकास; सौन्दर्यानुभूति व रसानुभूति; सांस्कृतिक चेतना तथा सर्जनात्मक योग्यता का विकास मातृभाषा के बिना सम्भव नहीं है। हिन्दी भाषा वैज्ञानिक लिपि, समृद्ध शब्दावली, सरल वाक्य रचना, स्वाभाविकता, क्षेत्रीय व्यापकता तथा राष्ट्रीय एक्य, समृद्ध साहित्य व ज्ञान क्षेत्र से सम्पन्न होने के कारण भारतीय संस्कृति का वास्तविक प्रतिनिधित्व करती है। स्वेवैली (1982) ने अधिगम शैली की उपश्रेणी संज्ञानात्मक शैली पर भाषा माध्यम का सम्बन्ध पाया। नुकॅट एवं डेनीज़ (2010) ने अधिगम शैली पर मातृभाषा का प्रभाव पाया। शिक्षण–अधिगम की माध्यम भाषा होने पर हिन्दी भाषा की विशिष्टताओं का असर विद्यार्थियों के अधिगम पर हो सकता है। यह आनुभविक प्रतीति है कि विद्यार्थियों की अधिगम शैलियाँ कक्षा–कक्ष में अनुदेशन एवं विद्यार्थी अधिगम को प्रभावित करती है। अधिगम तथा अधिगम शैली साहित्य यह प्रमाण प्रस्तुत करता है कि विद्यार्थी–अधिगम पर शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव रहता है, किसी न किसी रूप में इसकी अधिगम शैलियों के विनिश्चयन में भी भूमिका हो सकती है। जब विद्यार्थियों की अधिगम शैली कक्षा–कक्ष अनुदेशन एवं विद्यार्थी अधिगम को प्रभावित करती है। तब क्या हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अधिगम शैली वरीयताएँ उनकी उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि से स्वतंत्र होती हैं ?इस

*सहायक प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान–304022

प्रश्न के उत्तर प्राप्त करने के उद्देश्य उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अधिगम शैली वरीयताओं का अध्ययन किया गया।

परिकल्पनाएँ

अध्ययन उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए शैक्षिक उपलब्धि से अधिगम शैली के स्वतन्त्र होने की अग्रांकित सात परिकल्पनाएँ निर्मित की गयी–

1. हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की नमनीय बनाम गैर नमनीय अधिगम शैली पर वरीयताएँ शैक्षिक उपलब्धि से स्वतन्त्र होती हैं।
2. हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक अधिगम शैली पर वरीयताएँ शैक्षिक उपलब्धि से स्वतन्त्र होती हैं।
3. हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक अधिगम शैली पर वरीयताएँ शैक्षिक उपलब्धि से स्वतन्त्र होती हैं।
4. हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित अधिगम शैली पर वरीयताएँ शैक्षिक उपलब्धि से स्वतन्त्र होती हैं।
5. हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की लघु अवधान अवधि बनाम दीर्घ अवधान अवधि अधिगम शैली पर वरीयताएँ शैक्षिक उपलब्धि से स्वतन्त्र होती हैं।
6. हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित अधिगम शैली पर वरीयताएँ शैक्षिक उपलब्धि से स्वतन्त्र होती हैं।
7. हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की वातावरण उन्मुख बनाम वातावरण मुक्त अधिगम शैली पर वरीयताएँ शैक्षिक उपलब्धि से स्वतन्त्र होती हैं।

शोध अध्ययन विधि

शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अधिगम शैली का विश्लेषण एवं वर्णन करने के लिए सर्वेक्षण अध्ययन की वर्णनात्मक विधि 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का उपयोग किया गया ।

न्यादर्शन एवं न्यादर्श

इस अध्ययन के आरम्भिक न्यादर्श में राजस्थान राज्य के जयपुर जिले में स्थित एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर से सम्बद्ध हिन्दी माध्यम के 10+2 स्तर के विद्यालयों की कक्षा ग्यारह में अध्ययनरत 416 विद्यार्थियों (251 बालक व 165 बालिकाओं) का चयन 'स्तरीकृत यादृच्छिक गैर अनुपातिक न्यादर्शन' विधि से किया। आरम्भिक रूप से चयनित इन विद्यार्थियों को 10 बोर्ड परीक्षा के प्राप्तांकों के आधार पर उच्च, औसत व निम्न शैक्षिक उपलब्धि स्तरों में वर्गीकृत किया गया। अध्ययन के उद्देश्यानुसार इस वर्गीकरण में से औसत शैक्षिक उपलब्धि स्तर वाले विद्यार्थियों को छोड़ देने पर कुल 191 विद्यार्थियों में से उच्च शैक्षिक उपलब्धि स्तर के 109 तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि स्तर के 82 विद्यार्थी चयनित हुए।

शोध उपकरण

शैक्षिक उपलब्धि स्तर का निर्धारण करने के लिए शोधकर्ता द्वारा 'शैक्षिक उपलब्धि सूचना प्रपत्र' का विकास किया गया तथा इस अध्ययन के उद्देश्यानुकूल मानकीकृत अधिगम शैली अनुसूची उपलब्ध होने के कारण डॉ. सुभाष चन्द्र अग्रवाल द्वारा निर्मित 'अधिगम शैली अनुसूची' का उपयोग किया गया।

प्रदत्तों की प्रकृति

हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित प्रदत्त आवृत्तियों में एवं अधिगम शैली सूची से प्रदत्त वरीयताओं के रूप में प्राप्त हुए। इस प्रकार शैक्षिक उपलब्धि सूचना प्रपत्र तथा अधिगम शैली सूची दोनों उपकरणों से प्राप्त प्रदत्त मात्रात्मक प्रकार के थे।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर न्यादर्श को दो स्तरों –उच्च एवं निम्न में वर्गीकृत करने के पश्चात् हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों का अध्ययन करने के लिए 2×2 की तालिकाएँ निर्मित की गयी। प्रत्येक अधिगम शैली के प्रति हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की प्रदर्शित वरीयताओं के काई वर्ग के मानों का अवकलन किया गया।

निष्कर्ष

उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की सातों अधिगम शैलियों पर दी गयी वरीयताओं के अवकलित काई–वर्ग के मानों का प्रस्तुतीकरण अग्रांकित तालिका में किया गया है–

तालिका 1
शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अधिगम शैलियाँ

क्र. सं.	अधिगम शैलियाँ	शैक्षिक उपलब्धि	अधिगम शैली वरीयताएँ		काई वर्ग का अवकलित मान
			ध्रुव 1	ध्रुव 2	
1.	नमनीय बनाम गैर नमनीय	उच्च	71	38	0.405*
		निम्न	57	25	
2.	वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक	उच्च	30	79	0.772*
		निम्न	18	64	
3.	दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक	उच्च	91	18	1.817*
		निम्न	74	8	
4.	क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित	उच्च	83	26	0.710*
		निम्न	58	24	
5.	लघु अवधान अवधि बनाम दीर्घ अवधान अवधि	उच्च	50	59	0.054*
		निम्न	39	43	
6.	अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित	उच्च	100	09	1.945*
		निम्न	70	12	
7.	वातावरण उन्मुख बनाम वातावरण मुक्त	उच्च	72	37	8.37**
		निम्न	37	45	

*सार्थक नहीं **सार्थक

उपर्युक्त तालिका 1 में शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों के लिए अवकलित काई वर्ग मानों का प्रस्तुतीकरण किया गया है। आसंग तालिका क्र. सं. 1 से 6 का अध्ययन करने से पता चलता है कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों द्वारा नमनीय बनाम गैर नमनीय, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक, दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु अवधान अवधि बनाम दीर्घ अवधान अवधि एवं अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित अधिगम शैलियों पर दी गयी वरीयताओं के परिकलित काई वर्ग मान .05 के विश्वास स्तर पर मुक्तांश 2 के तालिका मान से कम हैं। अतः इन अधिगम शैलियों से सम्बन्धित परिकल्पना क्र. सं. 1 से 6 सत्यापित हुई। उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की केवल वातावरण उन्मुख बनाम वातावरण मुक्त अधिगम शैली का परिकलित काई वर्ग मान शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में .05 के विश्वास स्तर पर मुक्तांश 2 के तालिका मान से अधिक है। अतः सम्बन्धित परिकल्पना 'हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की वातावरण उन्मुख बनाम वातावरण मुक्त अधिगम शैली पर वरीयताएँ शैक्षिक उपलब्धि से स्वतन्त्र होती हैं' को अस्वीकृत किया गया।

शोध परिकल्पना के परीक्षण व अधिगम शैली से सम्बन्धित वरीयताओं का वर्णित विधि से सांख्यिकीय विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की नमनीय बनाम गैर नमनीय, वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक, दृश्यात्मक बनाम श्रवणात्मक, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु अवधान अवधि बनाम दीर्घ अवधान अवधि तथा अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित शैलियों के प्रति प्रदर्शित वरीयताएँ उनकी उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि से स्वतंत्र हैं। जबकि हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की वातावरण उन्मुख बनाम वातावरण मुक्त अधिगम शैली के साथ उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि का साहचर्य है। सम्बन्धित तालिका 1 में प्रदर्शित प्रदत्तों से यह भी ज्ञात होता है कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों ने गैर नमनीय, वैयक्तिक, श्रवणात्मक, क्षेत्र आधारित, लघु अवधान अवधि एवं अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित अधिगम शैलियों की तुलना में क्रमशः नमनीय, गैर वैयक्तिक, दृश्यात्मक, क्षेत्र स्वतंत्र, दीर्घ अवधान अवधि, अभिप्रेरणा केन्द्रित अधिगम शैलियों को अधिक वरीयता दी है। इससे यह ज्ञात होता है कि हिन्दी माध्यम के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थी अधिगम समस्या के परम्परागत समाधानों से सन्तुष्ट न होकर सदैव अद्वितीय प्रतिक्रियाओं द्वारा समाधानों तक पहुँचने का प्रयास करने की प्रवृत्ति, किसी की सहायता से कार्य करना, दृश्यात्मक सहायक सामग्री से सीखने, माहौल से प्रभावित न होने अर्थात् स्वतंत्रता पूर्वक कार्य करने, लम्बे समय तक अनवरत रूप से कार्य व ध्यान केन्द्रण करने तथा अधिगम हेतु उत्सुक रहने आदि को अधिक वरीयता देते हैं। यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि हिन्दी माध्यम के उच्च शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थी जहाँ वातावरण केन्द्रित अधिगम शैली को उच्च वरीयता देते हैं, वहीं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थी वातावरण मुक्त अधिगम शैली को अधिक वरीयता देते हैं, अर्थात् उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले हिन्दी माध्यम के विद्यार्थी पूरी तरह से शांत तथा संवेदनशील वातावरण को अधिक पसन्द करते हैं जबकि निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले हिन्दी माध्यम के विद्यार्थी शान्त तथा संवेदनशील वातावरण के प्रति अधिक गम्भीर नहीं होते हैं।

विवेचना

प्रस्तुत अध्ययन का उपर्युक्त निष्कर्ष उद्घाटित करता है कि हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की वातावरण उन्मुख

बनाम वातावरण मुक्त अधिगम शैली को छोड़कर अन्य सभी अधिगम शैलियों के प्रति वरीयताएँ उनकी उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि से स्वतंत्र होती हैं। इस निष्कर्ष से प्रत्यक्षतः सम्बद्ध या असम्बद्ध होने वाला कोई अध्ययन उपलब्ध नहीं है जो शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों की जानकारी प्रस्तुत करता हो। हालांकि भिन्न स्थितियों में सम्पन्न हुए कतिपय अध्ययनों में मीन (1986), क्लार्क (1987), लक्स (1987), जैकब्सन (1995), मैकी (1995) व सिसोदिया (1989) तथा डॉस व मुथैया (2002) ने विद्यार्थी अधिगम शैलियों एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध तथा मीरा कौमारराजु एवं अन्य (2011) ने अधिगम शैली को शैक्षिक प्रदर्शन में सहयोगी पाया।

स्वेवैली (1982) ने फ्रेंच भाषी कनाडा, स्पेनिश भाषी मैक्सिको तथा अंग्रेजी भाषी संयुक्त राज्य अमेरिका के विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों का विश्लेषण किया व पाया कि मैक्सिको के विद्यार्थी अमेरिका तथा कनाडा के विद्यार्थियों से अधिगम शैली की उपश्रेणी संज्ञानात्मक शैली के सन्दर्भ में सार्थकरूप से भिन्न हैं। सिसोदिया (1989) ने प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित अधिगम शैलियों में से लघु अवधान बनाम दीर्घ अवधान अवधि अधिगम शैली को छोड़कर सभी अधिगम शैलियों के प्रति उच्च व निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों की वरीयताओं में सार्थक भिन्नता पायी। विट्टोरियो एवं अन्य (2000) ने केवल गैर निर्देशित अधिगम शैली के साथ शैक्षिक उपलब्धि को सार्थक रूप से सम्बन्धित पाया। कॉन्टेस्सा एवं अन्य (2005) ने कोल्ब की अधिगम शैली अनुसूची के तृतीय संस्करण का उपयोग करते हुए सर्जिकल रेजीडेंट्स पर किये गये अध्ययन में यह पाया कि सर्जिकल रेजीडेंट्स ने एकाग्रही (ब्वदअमतहपदह) अधिगम शैली को सर्वाधिक एवं बहुमार्गी अधिगम शैली को सबसे कम वरीयता दी। यिल्दिरिम एवं अन्य (2008) ने अधिगम शैली एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध को सार्थक नहीं पाया।

उपर्युक्त से भिन्न जनसंख्या, स्थिति व हिन्दी भाषा माध्यम विशेष के सन्दर्भ में प्रस्तुत शोध अध्ययन का निष्कर्ष न्यायोचित प्रतीत होता है, फिर भी और अधिक प्रामाणिक सामान्यीकरण के लिए अपेक्षाकृत बड़े न्यादर्श और/या भिन्न न्यादर्श पर अध्ययन किया जाना चाहिए।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम यह प्रकट करते हैं कि हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अधिगम शैली पर वरीयताएँ शैक्षिक उपलब्धि से स्वतन्त्र होती हैं। वैयक्तिक विभिन्नता के कारण शैक्षिक क्षेत्र में आने वाली समस्याओं के निराकरण करने के क्रम में प्रस्तुत अध्ययन सार्थक निहितार्थ रख सकता है। शिक्षाशास्त्री, मनोवैज्ञानिक, शिक्षक एवं अनुसंधानकर्ता हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए नवीन पद्धतियाँ, युक्तियाँ, प्रविधियाँ आव्यूह एवं उपागम आदि अपनाते हुए और या सुझाते हुए इन विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों को दृष्टि में रख सकते हैं। विद्यार्थियों की विभिन्नताओं के पक्ष को ध्यान में रखते हुए शैक्षिक नीति निर्माता, प्रबन्धक एवं पाठ्यक्रम निर्माता संस्थागत नियोजन एवं पाठ्यक्रम की संरचना कर सकते हैं।

संदर्भ

अग्रवाल, सुभाषचन्द्र (1987), लर्निंग स्टाइल अमंग क्रियेटिव स्टूडेन्ट्स, इलाहाबाद : सैन्ट्रल पब्लिशिंग हाऊस.

क्लार्क, थायर सूसन (1987), दा रिलेशनशिप ऑफ दा नॉलेज ऑफ स्टूडेन्ट्स परसीब्ड लर्निंग स्टाइल प्रिफरेन्सेज एण्ड स्टडी हेबिट एण्ड एटीट्यूट टू एचीवमैंट ऑफ फ्रेशमीन अ स्माल, डिजरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल–ए, 48 (04) 1987, 872.

कॉन्टेस्सा, जैक एण्ड अदर्स (2005), सर्जिकल रेजीडेंट्स लर्निंग स्टाइल्स एण्ड एकेडमिक एचीवमेंट, कररेण्ट सर्जरी, 62, 3,मई–जून, 344–347.

डॉस, एस. एरोक्कया एण्ड मुथैया, पी. एन. (2002), लर्निंग स्टाइल एण्ड एकेडमिक परफोर्मेंस ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट्स, एक्सपेरिमेंट्स इन ऍड्यूकेशन, ग्ग्ग (6), जून, 111–117.

डन, रीता एण्ड ग्रिगस, शिर्ली ए. (1988), लर्निंग स्टाइल्स : क्वाइट रिवोल्यूशन इन अमेरिकन सैकण्डरी स्कूल्स, रेस्टन, वी.ए. , नेशनल एसोसियशन ऑफ सैकण्डरी स्कूल प्रिंसिपल्स, 3

गैरेट हेनरी ई. एण्ड बुडवर्थ, आर. एस. (1971), स्टेटिस्टिक इन साइकोलॉजी एण्ड ऍड्यूकेशन, बोम्बे : वकील्स, फेफर एण्ड साइमन प्राइवेट लिमिटेड.

जैकब्सन, एडेल (1995), दा रिलेशनशिप बिटविन लर्निंग स्टाइल प्रिफेरेन्स एण्ड एकेडमिक एचीवमेंट ऑफ फ्रेशमीन एसोशियट डिग्री नर्सिंग स्टूडेन्ट्स, थिसिस एण्ड प्रोजेक्ट रिपोर्ट, कॉलेज ऑफ नर्सिंग, डिपार्टमेंट ऑफ ग्रेजुएट नर्सिंग, साऊथ डाकोरा स्टेट यूनिवर्सिटी.

क्लार्क, थायर सूसन (1987), दा रिलेशनशिप ऑफ दा नॉलेज ऑफ स्टूडेन्ट्स परसीब्ड लर्निंग स्टाइल प्रिफरेन्सेज एण्ड स्टडी हेबिट एण्ड एटीट्यूट टू एचीवमैंट ऑफ फ्रेशमीन अ स्माल, डिजरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल–ए, 48 (04) 1987, 872.

लक्स, केटी (1987), स्पेशल नीड्स स्टूडैन्टस : अ क्वालिटेटिव स्टडी ऑफ देअर लर्निंग स्टाइल्स, मिशीगन स्टेट यूनिवर्सिटी, डिजरटेशन एब्सट्रैक्ट्स इन्टरनेशनल–ए, 48 (3), 1988, 421.

मैकी, जुडिथ ए (1995), लर्निंग स्टाइल प्रिफेरेन्सेज, एकेडमिक एचीवमेंट एण्ड एकेडमिक मेजर्स इन कॉलेज स्टूडेन्ट :एन एक्सपलोरेटरी स्टडी, डिजरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल, 1995, 56 (4), 1262–1263–ए.

मीन, जॉन रोबर्ट (1986), कॉग्नीटिव एण्ड लर्निंग स्टाइल करैक्टैरिस्टिक्स ऑफ हाई स्कूल गिफ्टिंग स्टूडेन्ट्स, डिजरटेशन एब्सट्रैक्ट इन्टरनेशनल–ए 48 (04) 1987, 879–880.

मिलर, पी. (2001), लर्निंग स्टाइल्स : दा मल्टीमीडिया ऑफ दा माइन्ड, रिसर्च रिपोर्ट, इडी 451140.

मीरा कौमारराजु एवं अन्य (2011) दा बिग फाइव पर्सनेल्टि ट्रेट्स, लर्निंग स्टाइल्स एण्ड एकेडमिक एचीवमेंट, पर्सनेल्टि एण्ड इण्डीविजुअल डिफेरेन्सेज, 51, 4, सेप्टेम्बर, 472–477.

नुकॅट, गुण्डुज एवं डेनीज़, औजकन (2010) लर्निंग स्टाइल्स ऑफ स्टूडेन्ट्स फ्रॉम डिफेरेन्ट कल्चर्स एण्ड स्टडींग इन इस्ट यूनिवर्सिटी, प्रोसिडिया– सोशल एण्ड बिहेवियरल साइंसेज, 9, 5–10.

सिसोदिया, कृष्णा (1989), अ कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ लर्निंग स्टाइल्स ऑफ हाई एण्ड लो एचीवर्स, इलाहाबाद, रिसर्च एण्ड स्टडीज, डिपार्टमेंट ऑफ ऍड्यूकेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ इलाहाबाद.

स्टिट्ट – गोहदेस, एल. (2003), स्टूडेण्ट टीचर्स एण्ड देयर स्टूडेण्ट्स : डू देयर इन्स्ट्रक्शनल एण्ड लर्निंग प्रिफेरेन्सेज मैच ?, बिजनेस ऍड्यूकेशन फोरम 57 (4), अप्रैल, 22–27.

स्वेवैली, डोनाल्ड शिपले (1982), एनालिसिस ऑफ सलैक्टेड सैकण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स लर्निंग स्टाइल इन कनाडा, मैक्सिको एण्ड यूनाइटेड स्टेट्स, डिजरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल–ए, 43 (11), 1983, 3563.

विट्टोरियो एवं अन्य (2000), इन्टेलेक्चुअल एबीलिटि, लर्निंग स्टाइल, पर्सनेल्टि, एचीवमेंट मोटिवेशन, एण्ड एकेडेमिक सक्सेज ऑफ साइकोलॉजी स्टूडैण्ट इन हायर ऍड्यूकेशन, पर्सनेल्टि एण्ड इण्डीविजुअल डिफेरेन्सेज, 29, 6, दिसेम्बर, 1057–1068.

यिल्दिरिम, ओस्मन एण्ड अदर्स (2008), रिलेशनशिप बिटविन टीचर्स प्रसीव्ड लीडरशिप स्टाइल, स्टूडैण्ट्स लर्निंग स्टाइल एण्ड एकेडमिक एचीवमेंटः अ स्टडी ऑन हाई स्कूल स्टूडैण्ट्स, ऍड्यूकेशनल साइकोलॉजी, 28 (01), 73–81.